कुशाग्र जैन, कला में श्रम की गरिमा : श्रमिक दिवस पर एक विशेष चिंतन, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 2-3*

कला में श्रम की गरिमा : श्रमिक दिवस पर एक विशेष चिंतन

कुशाग्र जैन*

हर वर्ष **1 मई** को हम **अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस** मनाते हैं–एक ऐसा दिन जो श्रमिकों के अधिकारों, सम्मान और योगदान को श्रद्धांजलि देता है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि समाज की नींव सिर्फ विचारों या नीतियों से नहीं, बल्कि मेहनत से बनती है। और जब हम मेहनत की बात करते हैं, तो कला और कलाकारों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण बन जाती है।

जब हम 'श्रमिक' शब्द सुनते हैं, तो हमारे मन में अक्सर फैक्ट्री में काम करता मजदूर, खेत जोतता किसान, या निर्माण स्थल पर ईंट ढोता व्यक्ति आता है। पर क्या आपने कभी एक चित्रकार के रंगों को उकेरते हाथों को देखा है? क्या एक मूर्तिकार की हथौड़ी की आवाज किसी लोहार की चोट से कम श्रमसाध्य है? क्या एक कवि का हर शब्द हृदय और मस्तिष्क का परिश्रम नहीं है?

कला, अपने आप में श्रम की पराकाष्ठा है। हर कलाकृति – चाहे वह कविता हो, नृत्य, संगीत, चित्र या मूर्ति – श्रम के पसीने से जन्म लेती है।

श्रम के सौंदर्य को अभिव्यक्त करती है कला

कला का एक अनोखा गुण है: वह श्रम को सिर्फ दिखाती नहीं, उसका **सम्मान** भी करती है। लोककला में खेतों का जीवन, मजदूरों के गीत, और कारीगरों की कहानियाँ रची जाती हैं। नाटक, सिनेमा और साहित्य में मज़दूरों के संघर्षों को स्वर दिया जाता है। चित्रकला में एक मजदूर के हाथ, एक बुनकर की आंखें, या एक किसान का चेहरा अमर किया जाता है।

कलाकार सिर्फ कल्पना में नहीं जीता। वह अपने विचारों को आकार देने के लिए दिन-रात काम करता है। एक कवि जब शब्दों को साधता है, वह भी किसी श्रमिक की तरह श्रम करता है – बस उसका औजार कलम होती है। एक नर्तकी जब मंच पर उतरती है, तो हर गति में वर्षों का अभ्यास और परिश्रम समाया होता है।

1 मई को नई दृष्टि से देखें

इस श्रमिक दिवस पर क्यों न हम श्रम के साथ-साथ **सृजन** को भी सलाम करें? क्यों न हम एक चित्रकार के रंग, एक कुम्हार के चाक, एक बुनकर की उंगलियाँ और एक लेखक की कलम को भी उतना ही महत्व दें, जितना एक कारखाने या खेत के मजदूर को?

क्योंकि असल में –

हर कलाकार एक श्रमिक है। और हर श्रमिक, अपने आप में एक कलाकार।

1 मई हमें याद दिलाता है कि श्रम और कला दोनों ही समाज की आत्मा हैं। जहां श्रम जीवन को चलाता है, वहीं कला उसे अर्थ देती है। इसलिए इस दिन, केवल अधिकारों की बात न करें – **रचनात्मक श्रम का भी उत्सव मनाएँ**।

विश्व की कुछ प्रमुख कलाकृतियाँ जो श्रम से जुड़ी हैं:

1. "The Gleaners" – Jean-François Millet (1857, फ्रांस)

यह विश्व प्रसिद्ध चित्र तीन ग्रामीण स्त्रियों को खेत से बचे हुए अनाज के दाने बीनते हुए दर्शाता है। यह चित्र गरीब किसानों की कठिनाइयों और गरिमा दोनों को उजागर करता है। यह चित्र श्रमिक वर्ग के प्रति करुणा और सम्मान का प्रतीक बन गया है।

2. "Workers" Series – Diego Rivera (मेक्सिको)

रिवेरा की भित्ति चित्रों (murals) में मेक्सिको के श्रमिकों, किसानों, और उद्योगपतियों के बीच संघर्ष को दिखाया गया है। उसकी कला ने श्रमिकों की शक्ति और आत्मसम्मान को अभिव्यक्ति दी।

3. "Iron Rolling Mill" – Adolph Menzel (1875, जर्मनी)

यह चित्र जर्मनी की औद्योगिक क्रांति के दौर के एक इस्पात कारखाने को दर्शाता है, जहाँ मजदूर कठिन परिश्रम कर रहे हैं। यह श्रमिक जीवन की कठोरता, गर्मी, और श्रम की महिमा को बहुत यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।

4. "Stone Breakers" – Gustave Courbet (1849, फ्रांस)

इस चित्र में दो श्रमिक पत्थर तोड़ते हुए दिखाए गए हैं – एक युवा और एक वृद्ध। यह श्रम का कठोर यथार्थ और पीढ़ियों तक चलने वाली मेहनत को दर्शाता है। इसे श्रमिक वर्ग की दुर्दशा पर बनी पहली यथार्थवादी कृति माना जाता है।

5. "The Weavers" – Käthe Kollwitz (जर्मनी)

Kollwitz के चित्र और रेखाचित्र बुनकरों की हड़ताल और उनके जीवन संघर्ष को दर्शाते हैं। उन्होंने श्रमिकों के दर्द, क्रोध और संघर्ष को गहराई से उकेरा।

इन कृतियों से हमें क्या सीख मिलती है?

इन सभी कलाकृतियों में एक बात समान है – **श्रम का सम्मान**। चाहे वह खेत में काम करती स्त्रियाँ हों, फैक्ट्री में पसीना बहाते मजदूर हों, या हथौड़ी-छेनी थामे कारीगर – कलाकारों ने उन्हें सिर्फ कैनवास पर नहीं उतारा, बल्कि उन्हें समाज के *नायक* की तरह चित्रित किया।